भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन के अंतर को समझने के लिए हमें इन दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करना पड़ेगा जो इस प्रकार है----

(1) पाश्चात्य दर्शन सैद्धांतिक है। पाश्चात्य दर्शन का आरंभ आश्चर्च और उत्सुकता से हुआ है। वहाँ का दार्शनिक अपनी जिज्ञासा को शांत करने के उद्देश्य से विश्व, ईश्वर और आत्मा के संबंध में सोचने के लिए प्रेरित हुआ। इस प्रकार यूरोप में दर्शन का कोई व्यावहारिक उद्देश्य नहीं है। दर्शन का अनुशीलन किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए न होकर स्वयं ज्ञान के लिए किया गया है। अतः दर्शन को पश्चिम में साध्य के रूप में चित्रित किया गया है।

इसके विपरीत भारतीय दर्शन व्यावहारिक है। दर्शन का आरम्भ असन्तोष से हुआ है। भारत के दार्शनिकों ने विश्व में विभिन्न प्रकार के दुःखों को पाकर उनके उन्मूलन के लिए दर्शन की शरण ली। प्रो. मैक्समूलर की ये पंक्तियां इस कथन की पुष्टि करती है--- "भारत में दर्शन का अध्ययन मात्र ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं, वरन जीवन के चरम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता था।" भारत में दर्शन एक साधन के रूप में दीख पड़ता है जिसके द्वारा मोक्षानुभूति

होती है। इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि पश्चिम में दर्शन को साध्य (end in itself) माना जाता है, जबकि भारत में इसे साधन-मात्र माना गया है।

(2) पश्चिमी दर्शन को वैज्ञानिक कहां जाता है क्योंकि वहां के अधिकांश दार्शनिकों ने वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाया है। पश्चिमी दर्शन में विज्ञान की प्रधानता रहने के कारण, दर्शन और धर्म का संबंध विरोधात्मक माना जाता है। पाश्चात्य दर्शन में धर्म की उपेक्षा की गई है।

परन्तु जब भारतीय दर्शन के क्षेत्र में आते है तो पाते है कि उसका दृष्टिकोण धार्मिक है। इसका कारण यह है कि भारतीय दर्शन पर धर्म की अमिट छाप है। दर्शन और धर्म दोनों का उद्देश्य व्यावहारिक है। मोक्षानुभूति दर्शन और धर्म का सामान्य लक्ष्य है। धर्म से प्रभावित होने के फलस्वरूप भारतीय दर्शन में आत्म संयम पर जोर दिया गया है। सत्य के दर्शन के लिए धर्म सम्मत आचरण अपेक्षित माना गया है।

(3) पश्चिमी दर्शन बौद्धिक है। बुद्धि के द्वारा वास्तविक और सत्य ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है-ऐसा सभी दार्शनिकों ने माना है। बुद्धि जब भी किसी ज्ञान की प्राप्त करती है तब वह भिन्न-भिन्न अंगों के विश्लेषण द्वारा ही ज्ञान प्राप्त करती है। बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान परोक्ष कहलाता है। डेमोक्रैट्स, सुकरात, प्लेटो,

अरस्तू, डेकार्ट, स्पिनोजा, लाइबनीज, वूल्फ, हीगल आदि दार्शनिकों ने बुद्धि की महत्ता पर जोर दिया है।

परन्तु जब हम भारतीय दर्शन की ओर दृष्टिपात करते है तब उसे आध्यात्मवाद के रूप में रंगा पाते है। भारतीय दर्शन में आध्यात्मिक ज्ञान (Intuitive knowledge) को प्रधानता दी गई है यहां का दार्शनिक सत्य के सैद्धान्तिक विवेचन से ही संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह सत्य की अनुभूति पर जोर देता है। आध्यात्मिक ज्ञान तार्किक ज्ञान से उच्च है। तार्किक ज्ञान में ज्ञाता और ज्ञेय का द्वैत विद्यमान रहता है जबकि आध्यात्मिक ज्ञान में वह द्वैत मिट जाता है।

(4) पाश्चात्य दर्शन विश्लेषणात्मक (Analytic) है दर्शन की विभिन्न शाखाओं का, जैसे-तत्व विज्ञान (Metaphysics), नीति विज्ञान (Ethics), प्रमाण विज्ञान (Epistemology), ईश्वर विज्ञान, सौंदर्य विज्ञान की व्याख्या प्रत्येक दर्शन में अलग-अलग की गयी है।

परन्तु भारतीय दर्शन में दूसरी पद्धति अपनायी गयी है। यहां प्रत्येक दर्शन में प्रमाण विज्ञान, तर्क विज्ञान, नीति विज्ञान, ईश्वर विज्ञान आदि की समस्याओं

पर एक ही साथ विचार किया गया है। श्री बी. एन. शील ने भारतीय दर्शन के इस दृष्टिकोण को संश्लेषणात्मक दृष्टिकोण कहा है।

(5) पश्चिमी दर्शन इह-लोक (This- world) की सत्ता में विश्वास करता है जबकि भारतीय दर्शन इहलोक के अतिरिक्त परलोक (Other-world) में विश्वास करता है।

भारतीय दर्शन का दृष्टिकोण जीवन और जगत के प्रति दुःखात्मक एवं अभावात्मक है। इसके विपरीत पश्चिमी दर्शन में जीवन और जगत के प्रति दुःखात्मक दृष्टिकोण की उपेक्षा की गयी है तथा भावात्मक दृष्टिकोण को प्रधानता दी गयी है।

000